

गुरु वंदना केन्द्र "मिनी माता भवन कोहका - भिलाई" में 15 वॉ गुरु वंदना के अवसर पर **बिजली की सदुपयोगिता** - विषय पर "परिचर्चा कार्यक्रम" संपन्न

गुरु वंदना केन्द्र "मिनी माता भवन कोहका - भिलाई" गुरु वंदना के अवसर पर एक विशेष "परिचर्चा कार्यक्रम" जारी है। इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने अनुभूति व अनुभव कमबद्ध गुरु वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं। "परिचर्चा कार्यक्रम" में दिनांक 23 मई (दिन सोमवार) 2016 को शाम 6.30 बजे गुरु वंदना केन्द्र "मिनी माता भवन कोहका - भिलाई" में 15 वॉ गुरु वंदना के अवसर पर श्री सनत कुमार

डहरे, इलेक्ट्रीकल इन्सट्रक्टर, खंगटा कालेज ने "बिजली की सदुपयोगिता" विषय पर आयोजित "परिचर्चा

कार्यक्रम" में अपने विचार व अनुभव प्रदान किये। उन्होंने बताया कि : वर्तमान परिवेश में विश्व का ऐसे बहुत कम ही ब्यक्ति होंगे, जिन्होंने बिजली से परिचित नहीं होगा। यह भी सत्य है कि बिजली के बारे में जानकारीयों व कार्य करने का अनुभव कम ही लोगों को है। ट्रेनिंग व अनुभव से बिजली का कार्य किया जा सकता है। सिर्फ पढ़ाई लिखाई से ही बिजली संबंधित कार्य नहीं किया जा सकता। बिजली के कार्य करने वालों को तीन श्रेणी में रखा जा सकता है : 1 कुशल कारीगर, 2 अर्ध कुशल कारीगर और 3 नव सिखिया कारीगर। जानकार व अनुभवी प्रभारी के मार्ग दर्शन में कारीगर अपने ऊपर श्रेणी में आसानी से पहुँच सकते हैं। 'बिन पानी सब शून्य' की भांति आज कहा जा सकता है कि 'बिन बिजली सब व्यर्थ'। बड़े बड़े



कल कारखानों से ले कर झुग्गी झोपड़ी तक बिजली के उपकरण जरूर उपलब्ध हैं। ऐसी परिस्थितियों में बिजली कारीगरों की संख्या उपलब्धता अनिवार्य बन जाता है। प्रत्येक घरों में कम से कम एक बिजली कारीगर, बिजली के जानकार होना अति आवश्यक जान पड़ता है। इस दिशा में शासन प्रशासन के अलावा विभिन्न सामाजिक संगठनाओं को पहल करना होगा। ऐसा अगर नहीं होगा तो बिजली संबंधित दुर्घटनाओं को रोकना मुश्किल हो जायेगा। बिजली संबंधित छोटी सी चुक धन - जन की अपूर्ण य क्षति का कारण बन जाता है। जानकारी का अभाव व अति

उत्साही अथवा लापारवाही ही दुर्घटना का कारण बनता है। बिजली के सुरक्षा नियम हमारे आदत व्यवहार में समाहित हो। छोटे छोटे बच्चों में शुरू से ही सुरक्षा को संस्कार में समाहित करना होगा। बिजली के साथ ही इलेक्ट्रानिक्स उपकरणों की आज भरमार बन चुका है। आये दिन इनसे संबंधित दुर्घटनाएं प्रेस व इलेक्ट्रानिक्स मिडिया के माध्यम से पहुँचते रहता है। डुपलीकेट उपकरणों की भरमार सी नजर आती है। सस्ते व आसानी से मिलने की वजह से आम जनता इससे आकर्षित होती जा रही है। बिजली के सही सामान व उपकरण सस्ते व

आसानी से उपलब्ध कराना शासन प्रशासन के लिये एक बड़ी चुनौती है । अगर बिजली संबंधित दुर्घटनाओं को रोकने का नीयत साफ है तो इस चुनौती को स्वीकार करना होगा । कुछ चालाक व सरारती तत्व बिजली व इलेक्ट्रानिक्स की जानकारी को अंधविश्वास व रूढ़ीवाद को फैलाने में भी लगे हैं । भोले भाले जनता को विज्ञान के चमत्कार न बता कर देवी देवताओं के चमत्कार सिद्ध करने में लगे हैं । इसके अनेकों उदाहरण मिल जायेंगे । सत्य व असत्य की पहिचान करना व करवाना आवश्यक हो जाता है । जब कभी भी चमत्कार की बात सामने आये ,चमत्कार की तह में जाना आवश्यक हो जाता है ,ताकि आम जनों को इस धिनौनी हरकत से बचाया जा सके । इस अवसर पर विशेष रूप से एफ आर जनार्दन ,तुला राम टंडन ,वेदानंद दिव्य ,गोविंद बर्मन आदि उपस्थित थे ।



इसी कडी में अगले 30 मई ( दिन सोमवार) 2016 को शाम 6.30 बजे गुरु वंदना केन्द्र मिनी माता भवन कोहका भिलाई में 16 वीं गुरु वंदना के अवसर पर पर अगला " परिचर्चा कार्यक्रम " आयोजित है । कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्य कर्म का लाभ उठावें ।

( गोविंद बर्मन )

गुरु वंदना केन्द्र उप प्रभारी

मिनी माता भवन ,कोहका-भिलाई

आदरणीय मुख्यमंत्री

दिनांक २५ अप्रैल २०१६

छत्तीसगढ़ शासन

श्री रमनसिंह जी

विषय : छत्तीसगढ़ शासन द्वारा साक्षर भारत कार्यक्रम अंतर्गत पुस्तकालयों हेतु प्रदाय, अमरनाथ द्वारा लिखित बाबा गुरु घासीदास (नव साक्षर साहित्य) केदारनाथ एंड सन्स मथुरा द्वारा प्रकाशित पुस्तक के सन्दर्भ में ज्ञापन

परम आदरणीय हरिभक्त हरिजन महोदय,

आपके सरकार द्वारा वितरित पुस्तक में आपने गुरु घासीदास जी के जन्म के संबंध में प्रकाशित करवाया है कि "गुरु घासीदास जी का जन्म छत्तीसगढ़ के रायपुर जिलान्तर्गत गाँव गिरौदपुरी में सोमवार माघ पूर्णिमा १८ दिसंबर १७५६ को एक श्रमजीवी हरिजन परिवार में हुआ था."

महोदय छत्तीसगढ़ में कौन सी जाति हरिजन के अंतर्गत आता है यह स्पष्ट नहीं किया है क्या छत्तीसगढ़ के ब्राहमण क्षत्री ठाकुर हरिजन के अंतर्गत आते हैं जो हरि मंदिर के ठेकेदार हैं.

महोदय ऐसे तो आपने छत्तीसगढ़ को हरिजन बनाने का ठेका जो ले रखा है, सारे हरिभक्त हरिजन आपके इर्द- गिर्द तिलक लगाये घूमते रहते हैं खासकर नागपुर हेड क्वार्टर से भी आते हैं उन्हें ये हरिजन की पदवी देना ज्यादा उचित होगा. ये तो हरी के सबसे करीब रहते हैं और शायद आप भी.

लेकिन यह बात मैं आपसे स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि छत्तीसगढ़ ही नहीं पुरे देश के सतनामी, न तो आपके हरि या हर को मानते हैं और न ही वे किसी भी तरह हरि या हर भक्त कहलाना चाहते हैं अतः ये पदवी जो आपने गुरु घासीदास के लिए नवाजा है हम सादर आपको वापस करते हैं. मुख्यमंत्री महोदय आप हरिमंदिर और आपके हरिहर भगवान् के पास बने रहिये और हरिजन भी बने रहिये. पर हमे खासकर सतनामियो को यह कदापि मंजूर नहीं है. यह भी सत्य है कि दक्षिण भारत की देवदासी, प्रथा छत्तीसगढ़ में कहीं पर नहीं लागू है शायद यहाँ के ब्राह्मण ठाकुर समाज मानते हो तो आपसे ज्यादा कौन जान सकता है.

अतः आपसे कर बद्ध प्रार्थना है की सतनामियो को किसी भी तरह हिन्दू घोषित करने की कष्ट न करे सतनामियो का उदगार देश भर में हमारे महान संत कबीरदास जी ने किया और छत्तीसगढ़ में बाबा गुरु घासीदास जी ने किया. उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है "हिन्दू तुर्क के बिच सतनामी कहावा" सतनामी स्वतंत्र समाज और विचारधारा है जो किसी भी तरह हिन्दू रूढ़ीवाद व परम्परा का समर्थन नहीं करता है. यह कबीर की धरती है यह गुरु घासीदास की धरती है. आपके देवी देवताओं पर न तो हमारे पूज्य संत गुरुओ ने विश्वास किया है और न ही सतनामियो को किसी भी तरह कोई अंधविश्वास करने का सलाह दिया है. मन्दिरवा माँ का करे जाबो ...ये उनकी वाणी है.

आशा है आप हमारी आशय को अच्छी तरह समझ गए होंगे और हम पुनः आपके सरकार द्वारा जारी किये गए पुस्तक में दिए गए हरिजन को पदवी को आपको वापस करते हैं क्योंकि आप से बड़ा यहाँ कोई हरिभक्त हरिजन हमें नजर नहीं आता, आप कृपा कर संभाले अपने उपाधि को और यदि आप भी हरिभक्त हरिजन नहीं हैं तो हम सतजन आपके साथ है.

कृपया उन लेखक व प्रकाशक पर तत्काल कार्यवाही करे जिन्होंने यह घिनौनी हरकत सतनामियो के साथ किया है अन्यथा यह समझा जाएगा की आपने जानबुझकर यह पुस्तक मथुरा में प्रिंट कराया है और गाँव गाँव अपने सरकार के माध्यम से बटवाया है जिसके लिए आपको दोषी करार दिया जाय

आशा है आप प्रदेश के मुखिया होने के नाते तत्काल कार्यवाही कर हमें सूचित करने कृपा करे धन्यवाद

आपका प्रार्थी

टी आर खूटे

चेयरमेन स्वागत ट्रस्ट नयी दिल्ली

## पृष्ठभूमि - अम्बेडकरवाद की वर्तमान परिपेक्ष में

आज इक्कसवीं शताब्दी में प्रवेश हुए लगभग १५ साल बीत चुके हैं। वैज्ञानिक युग अपनी चरम पराकाष्ठा पर है। लेकिन सत्ता के गलियारों में साम्प्रदायिकता सिर चढ़ कर नाच रही है और फिरकापरस्ती हाथों में मानवता कराह रही है। आम आदमी परम्परा से जकड़े कल्पनालोक से बाहर निकल कर व्यावहारिक दुनिया में प्रवेश करने को छटपटा रहा है। ऐसे में अम्बेडकरवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। आखिर अम्बेडकरवाद है क्या ?



अम्बेडकरवाद एक विशिष्ट विचारधारा है जो बाबा साहब डा भीमराव अम्बेडकर के ईर्द गिर्द घूमता है, सम्पूर्ण क्रांति का परिचायक है। १४ अप्रैल १८९१ को जन्मे बाबा साहब का बचपन सामाजिक कुव्यवस्था का परिचायक रहा है, जहाँ हैवानियत का बोलबाला था। अंग्रजी हुकूमत में भी मनुवाद का बोलबाला था। मनु का संविधान सुनकर ही शुद्रों का दिल कांप उठता है जहाँ आदमी को जानवर से भी बदतर समझा जाता था। उनके स्कूल के दिनों का यदि विवेचना किया जाय तो वह अपने आप में एक ग्रन्थ बना जाएगा। वे किन-किन कठिनाइयों के बीच अपना प्राथमिक शिक्षा से स्नातकोत्तर व अनेक विषयों जैसे अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति, भाषा, विज्ञान पर परमगत व शोध करते हुए विश्व के छठवे रत्न तक पहुँचे, उसका मर्म चन्द्र शब्दों में यहाँ बयाँ नहीं किया जा सकता। उन्हें अपने बीमार बच्चों के लिए दवा तक उपलब्ध नहीं करा पाए। बाबा साहब ने भी बुद्ध की तरह उन दुःखों के सारे रास्तों से झेलते हुए अपना जीवन सफर पार किया है जिसे वे अपने विशिष्ट ज्ञान व कटु अनुभव के आधार पर अच्छी तरह समझने का प्रयास किया। अतः व्यवस्था के मार से निकली अम्बेडकरवाद जिसमें विज्ञानवाद समाहित है सम्पूर्ण क्रांति का रास्ता प्रशस्त करती है। यह समग्र परिवर्तन की दिशा तय करता है जिसमें बुद्ध से लेकर कबीर ज्योतिबा फुले, साहू जी महाराज जैसे अनेक संत महापुरुषों के विचार,

ज्ञान व आन्दोलन से सराबोर, जो समता, स्वतन्त्रता, बन्धुत्व और न्याय के रास्ते से होकर गुजरता है, जहा से इंसानियत का रास्ता निकलता है । अपने आप में एक अति-विशिष्ट विचारधारा है जिसका परिलक्षण हमे बाबा साहब द्वारा निर्मित भारतीय संविधान में देखने को मिलता है। मानव कल्याण का एक मात्र रास्ता है।

डा अम्बेडकर को मान्यवर कांशीराम जी ने समझने का विशेष प्रयास किया, जब उनके एक साथी प्रमोदकुमार जो देहरादून में ६ दिसम्बर १९५६ को उनके मरणोपरांत अपना खाना पीना छोड़ दिया था, वे बार बार यही कह रहे थे कि ।।।मेरा बाबा चला गया। लेकिन तब तक कांशीराम जी को अम्बेडकर के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था ये बात उन्होंने स्वयम बताया और तमन्ना की बात करते रहे। इस बीच उनका साइंटिफिक आफिसर के पद पर पूना के किर्की फेक्ट्री में चयन हो गया और वहा कार्य करते हुए अम्बेडकर जयंती की छुट्टी को लेकर विवाद में फंस गए। उन्हें मि। डी के खापर्डे ने “जातिभेद का उच्छेद” नामक एक किताब दिया जिसे कांशीराम जी ने रात भर पढ़ा और बाद में कई बार पढ़ा तब उन्हें एहसास हुआ कि बाबा साहब ने इतना बड़ा महान काम किया है जिसकी ब्याख्या साधारण शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। आपने अम्बेकरवाद को पुरे देश भर में फैलाने का बीड़ा उठाया, जिसके फलस्वरूप आज हम बाबा साहब आंबेडकर और उनके विचारधारा को जान पाए। अतः यहाँ पर उनका जीकर करना उचित है।

सन १९८५ से २००० तक लगभग १५ वर्षों का अन्तराल अम्बेडकरवाद की प्रचार प्रसार एक अधिकार युद्ध की तरह सामने आया, बहुत महत्वपूर्ण समय रहा है जब इस विचारधारा ने देश के सबसे बड़े राज्य उत्तरप्रदेश में अपना न केवल पैठ बनाया, बल्कि आस पास खासकर मध्यभारत में अपना जमीन तैयार करने लगा था। सांप्रदायिक तकते सिमट सी गयी थी। एक ओर मनुवाद अगले जन्म सुधारने की सलाह देता है भक्तिपथ के नाम पर दासता की और ले जाता है ताकि इस जीवन को आप दुसरो की, खासकर सवर्णों की सेवा सुश्रुषा में बीता दो। तो दूसरी ओर

अम्बेडकरवाद इसी जन्म को सुधारने का रास्ता बताता है, आम जनता को गुलामी व दासता से मुक्ति दिलाता है। बहुसंख्यक पिछड़ी जातियां जो रुढ़िवादी परम्परा के आड़ में गुलामी की जीवन जी रही थी उन्हें अम्बेडकरवाद से मुक्तिपथ तलाशने का मौका मिला। संविधान में प्रावधान के कारण मंडल कमिशन ने आजादी के चालीस साल बाद १९८९ में पिछड़ों को प्रतिनिधित्व का अधिकार दिलाया जो मनुवाद के जवाब में एक मात्र अम्बेडकरवाद ही रहा है।

वास्तव में अम्बेडकरवाद क्या है? यह वास्तव में अधिकार युद्ध का सूत्रपात है जिसमें असमानता के विरुद्ध संघर्ष करने की शक्ति मिलती है। असमानता का मुख्य श्रोत सारे संसाधनों और शक्तियों का कुछ विशिष्ट वर्ग (सवर्णों) द्वारा नियन्त्रण किया जाना, जिसका मुख्य आधार मनुवादी व्यावस्था है, जिसके कारण जीवन के हर क्षेत्र सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में आज प्रजातंत्र में भी असमानता व्याप्त है। यह विशिष्ट वर्ग ही शोषक और शासक है जो अमरबेल की तरह दूसरों के मेहनत पर मौज मस्ती करता है। इस शोषक वर्ग ने अपनी रक्षा कवच के रूप में अज्ञात शक्ति “ईश्वर नामक यंत्र” का अविष्कार किया जो राजशाही प्रथा का पुरोहिती उपज है। यह अज्ञात शक्ति दाता भी है और मारता भी है, जिसका जन्मदाता केवल पुरोहित है। उस गैर-जिम्मेदार परम-शक्ति का पता केवल पुरोहित ही जानता है और यदि कोई इस ईश्वर नामक शोषक यंत्र से मिलना चाहे तो वह पुरोहितों के मध्यस्थता के बिना संभव नहीं है। वह उसे पेड़ पौधे पत्थर नदी नाले तालाब पहाड़ पर्वत न जाने कहाँ कहाँ छिपा रखा है जब जहाँ चाहे लाकर खड़ा कर देता है। इस परमशक्ति “ईश्वर नामक यंत्र” से मिलने पर आपका काम बने या ना बने इसकी कोई जिम्मेदारी नहीं है। केवल काम बनने का श्रेय लेता है बिगड़ने पर आपके भाग्य की खराबी निकल देता है। यह ईश्वर नामक यंत्र जो मन्दिरों में पत्थर की मूर्त बना बैठा है कालाधन इकट्ठा करने का विशेष श्रोत है। इस खरनाक शोषण यंत्र को अम्बेडकरवाद ने वैज्ञानिक सोच लाकर असरहीन तो बना दिया, लेकिन

परम्परा ने इसे पुनर्जीवित कर दिया फलस्वरूप पीके का आस्था चैनल गलत नम्बर पर जरूर चला गया जिसे आज का पढ़ा लिखा वर्ग जानने समझने लगा है।

आंबेडकरवाद भारतीय परिपेक्ष में वर्ग संघर्ष के सिद्धांत को नए ढंग से उत्प्रेरित करता है। भारत में मार्क्स का सिद्धांत, साम्यवाद एकांगीपन का शिकार होता नजर आता है जिसके लिए डा आंबेडकर को कहना पड़ा - या तो रसियन भारत में साम्यवाद लाना नहीं चाहते या यहाँ कैसे लाना है उन्हें मालुम नहीं अन्यथा वे चन्द ब्राह्मण लडको के हाथ इस साम्यवाद को नहीं सौंपे होते। मार्क्सवाद के अनुसार सारे दुखो का कारण आर्थिक विषमता है जिसका मुख्य कारण सारे संसाधनों का पूंजीपतियों द्वारा नियन्त्रण है। मजदुर कल-कारखाने, खेत-खलिहान में दिन-रात मेहनत कर अपने खून-पसीना से धन कमाता है लेकिन बिना किसी परिश्रम के पूंजीपति वर्ग केवल लाभ अर्जित करता है। रसिया में वर्ग भेद है पर भारत जैसा वर्ण और जाति भेद नहीं है अतः शोषक वर्ग के खिलाफ सर्वहारा वर्ग को संगठित करना आसान रहा जिसका क्रियान्वन लेनिन और स्टालिन के द्वारा संभव हो सका। भारत में वर्ण और जाति व्यवस्था के कारण गरीब ब्राह्मण और गरीब चमार या भंगी एक साथ एक मंच पर इकट्ठा नहीं हो सकते। ठीक उसी तरह आमिर ब्राह्मण और आमिर चमार भी एक साथ एक मंच पर संगठित नहीं हो सकते। करोडपति बाबू जगजीवनराम का उप प्रधान मंत्री होते हुए सम्पूर्णानन्द की मूर्ति को पवित्रीकरण किया गया, हाल ही में बिहार का मुख्य मंत्री रहते हुए माझी को इसी तरह बेइज्जती का सामना करना पड़ा जो अपने आप में मनुवादी विष से व्याप्त कुव्यवस्था का परिचायक है। मनुवाद एक खतरनाक विष (जहर) है जो भाईचारा को नष्ट करता है और दुश्मनचारा को बढ़ावा देता है द्वेष और घृणा का जन्मदाता है । मनुवाद घर घर में विभिषण पैदा करता जो अपने ही भाई के घर लंका को नाश करता है अतः मनुवादियों को अक्सर साम, दाम, दंड, भेद के द्वारा ऐसे लोगो की ही तलाश रहती है ।

अतः बाबा साहब आंबेडकर ने भारत के परिपेक्ष में जाति-वर्ग के सिद्धांत को प्रतिपादित किया जो मनुवाद का एक मात्र जवाब है। आपने ६००० जातियों को तीन वर्ग एक सामान आधारशिला पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़े वर्ग के रूप में संकलित किया। यह अपने आप में महान कृत्य है जो आज बिखरा समाज एक साथ, एक सतह पर संगठित होता नजर आता है। इतना ही नहीं आपने धार्मिक अल्पसंख्यकों की भी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए संविधान में विशेष प्रयोजन रखा। इनको पुनः संगठित करने काशीराम जी का विशेष योगदान भुलाया नहीं जा सकता जो प्रजातंत्र की परिभाषा के अनुरूप महामानव बुद्ध के विचार बहुजन हिताय बहुजन सुखाय को अंगीकृत करते हुए, बहुजन समाज बनाकर सारे दुखी पीड़ित जानता को अपने दुखों का इलाज करने, संविधान प्रदत्त एक ब्यक्ति, एक वोट और एक वोट, एक कीमत के सिद्धांत को लागू करने के साथ बाबा साहब का सपना अधिकार युद्ध का सूत्रपात किया। बहुजनवाद, मनुवादी शोषकों के विरुद्ध शोषितों के राजनितिक युद्ध का शंखनाद है जो अभी सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक शक्ति की और मुड़ता नजर आता है, मनुवाद से सम्पूर्ण आजादी का रास्ता प्रशस्त करता है।

आंबेडकरवाद को केवल किसी एक परिपेक्ष में आँका नहीं जा सकता है। यह एक समग्र क्रांति पथ है जिसमें चल कर सम्मानपूर्वक मनुष्य चैन की सांस ले सकता है। अतः समता के साथ स्वतन्त्रता और भाईचारा का भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। आज देश आजाद हुआ है पर देश की जनता रुढ़िवादी खड़ी समाज व्यवस्था के कारण यथावत गुलाम है। एग्लो आर्यन से सता इंडो आर्यन के पास चला गया। आर्य जो विदेशी यूरोशियन होने के कारण हजारों साल बाद भी भारत के मूल निवासियों से घुल मिल नहीं पाए। गांधी जी जब अंग्रेजों से आजादी की बात कर रहे थे तब चर्चिल ने गाँधी जी को याद दिलाया-- जो पहले आये हैं वे पहले जाए हम तो बहुत बाद में आये हैं। इस पर गांधी जी को कहना पड़ा यह सच है कि हमारे पूर्वज विदेशी हैं पर हजारों साल से रहते रहते हम मूलनिवासियों से घुल मिल गए हैं। यह सच्चाई है



कि आज भी मूलनिवासी और आर्यपुत्र आपस में घुल मिल नहीं पाए वे पहले भी शोषक थे आज भी शोषक है। इसीलिए काशीराम जी तीसरी आजादी की बात करते थे। अभी असली आजादी का संघर्ष होना बाकी है। प्रजातंत्र है पर प्रजा अधिकार विहीन है गरीबों के वोट अमीरों के नोटों से खरीदे जाते हैं। राजशाही प्रथा में गुलाम बिकते थे उन्हें बाजारों में खरीदा बेचा जाता था, आज गरीबों के नेता बिकते हैं उनके वोट बिकते हैं। गरीबों पर जुल्म होता है गरीबों के बिके नेता मुह में कपड़ा ठूस कर चुप बैठ जाते हैं। आज चरनदास और चमचो का बोलबाला है, उपर से सुबेदारी प्रथा खुब चल रही है सूबेदार समाज को मनमाना लुट रहे हैं। सूबेदारों के कारण जनता की आवाज दब सी गयी है। जिस आत्मा सम्मान की बातें व संघर्ष काशीराम जी ने सड़को में शुरू किया था आज वे सड़के सुनी नजर आती हैं। प्रेम व भाईचारा के लिए फिर से संघर्ष करने की आवश्यकता है।

अम्बेडकरवाद मीडिया के सहारे बंद कमरे से नहीं चल सकता। आज मीडिया पूजावाद का खुला समर्थक है उनके हाथ की कठपुतली है वे जब जिधर मोड़ना चाहते हैं मोड़ लेते हैं। दलित शोषितों के अधिकार की लड़ाई में मीडिया केवल जनता को गुमराह ही कर सकती है जो राजशाही काल में गीता की उत्पत्ति से हुआ, आज वही हो रहा है गीता में पाठ पढ़ाया जाता है --- कर्म करते जाओ फल की चिंता मत करो। यह दासों के लिए जरूरी था की वे अपनी मेहनताना मागने न लाग जाए इसलिए कर्म फल का पाठ पढ़ाया गया। पिछले जन्म के बुरे कर्मों का फल तुम्हें इस जन्म भुगतना पड़ रहा है। इस जन्म में अच्छे कर्म अर्थात् अपने मालिक की सेवा भक्ति करोगे तो अगले जन्म में तुम्हें फल मिलेगा। गीता के बदले आज टीवी चैनल का मीडिया आ गया है जो मनुवाद का पोषक है। आज मोदी जी इसी अम्बेडकर भक्ति की बात करते हैं वास्तविकता चाहे जो कुछ भी हो, लेकिन आज आंबेडकर की बात करना उनकी मज़बूरी है। भले ही इनका मातृ संस्था के प्रमुख खुले तौर संविधान समीक्षा की बात भी करते हैं, आजीवन आंबेडकर का विरोध करते रहे हैं। एक ही ढोल से एक साथ दो अलग अलग ताल निकल रहे हैं, यह चिंता का विषय अवश्य

है। बाबा साहब के मेहनत से १९३५ में अंग्रेजी शासन के दौरान प्रतिनिधित्व के तहत मिला अधिकार जिसे गांधी ने काटा मार कर आरक्षण में तब्दील कर दिया वह भी इन मंद-बुद्धि संघियों के आँख का किरकिरी बना हुआ है। वे तरह तरह की अटकले चलाते रहते हैं जिसे पूंजीवादी सवर्ण मीडिया नमक मिर्ची मिलाकर जनता में परोसते रहती है। आज असहिष्णुता के दौर से देश गुजर रहा है।

हाल के हैदराबाद केन्द्रीय विश्व विद्यालय में हुई संस्थागत हत्या का जीकर करना वर्तमान परिपेक्ष में जरूरी है जो आंबेडकरवाद की बाँती पृष्ठभूमि का एक ज्वलंत उदाहरण है। इस विश्व विद्यालय में दलित पिछड़े विद्यार्थियों की संख्या बड़े तादाद में है जो विगत कुछ सालों से घोर जातिवादी विवेचनाओं के बावजूद स्वतंत्र अस्तित्व की लड़ाई लगातार लड़ रहे हैं। इन्होंने कुछ साल पहले अम्बेडकर स्टूडेंट एसोसिएशन (ए एस ए) के नाम से चला रहे हैं और विद्यार्थियों को ज्योतिबा फुले डा आंबेडकर पेरियार रामास्वामी नायकर जैसे क्रांतिकारी महापुरुषों के जीवन और कार्य पर शोध करने को प्रोत्साहित किया है। २०१३ में जबसे भाजपा की नयी सरकार मोदी जी के नेतृत्व में आई है और एक अर्धशिक्षित गंवार महिला मानव संसाधन जैसे महत्वपूर्ण विभाग का मंत्री बनाया गया। तबसे शिक्षा के स्तर में लगातार गिरावट जारी है। इस महकमा पर आर एस एस का खास नजर है अपने विद्यार्थी संगठन ए बी भी पी को सभी विश्व विद्यालयों में स्थापित कर इन्हें शक्तिशाली बनाने का लगातार प्रयास जारी है ताकि वे इन संस्थानों में अपनी गन्दी विचारधारा को लाद सकें। रोहित बेमुला नामक एक होनहार शोधकारी छात्र को उनके साथियों के साथ षड्यंत्र के तहत केन्द्रीय मंत्रियों दबाव में पहले विश्व विद्यालय छात्रावास से निष्कासित किया गया। फिर उसे षड्यंत्र के तहत संदिग्ध हालत छात्रावास के कमरे में मृत पाया गया जिसे आत्महत्या का रूप दिया जा रहा है आज भी जांच का विषय है की प्रतिबंधित क्षेत्र में वह कैसे पहुंचा बंद कमरे की चाबी किसने दी। उसका कसूर था की वह अम्बेडकरवाद को बढ़ावा दे रहा था जो मनुस्मृति को मंजूर नहीं था। यह चिंगारी केवल यही तक सिमित नहीं रहा जे एन यु दिल्ली जाधवपुर विश्व विद्यालय



गुरु वंदना केन्द्र " मिनी माता भवन कोहका - भिलाई "में पंचम गुरु वंदना के अवसर पर

**समाज में शिक्षा की दशा और दिशा - विषय पर " परिचर्चा कार्यक्रम " संपन्न**

**PARICHARCHA PROGRAMME HELD**

गुरु वंदना केन्द्र " मिनी माता भवन कोहका - भिलाई " गुरु वंदना के अवसर पर एक विशेष " **परिचर्चा कार्यक्रम** "जारी है । इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने अनुभूति व अनुभव कमबद्ध गुरु वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं । " **परिचर्चा कार्यक्रम** " में दिनांक 21 मार्च ( दिन सोमवार ) 2016 को शाम 6.30 बजे गुरु वंदना केन्द्र " मिनी माता भवन कोहका - भिलाई " में पंचम गुरु वंदना के अवसर पर श्री हीरामन दास कुर्रे , कु दीक्षा खेवार ,श्री आकाश बंजारे ,कु मनीषा बंजारे , , कु पायल बघेल , ,रोशन सिरमौर ,अतुल बांधे ,चंद्रेश कुमार देशलहरा ,आदि ने " **समाज में शिक्षा की दशा और दिशा** " विषय पर आयोजित " परिचर्चा कार्यक्रम " में अपने अपने विचार व अनुभव प्रदान किये । सबने महसूस किये : जिस समाज में शिक्षा का अभाव होता है या जो समाज शिक्षा के प्रति उदासीन होता है ,वह समाज धीरे धीरे गुलामी की तरफ अगसर होता है । भारत देश में सदियों से वंचित समाज गुलामी व लाचारी का बोझ झेल चुका है । सन् 1825 में पहली बार शिक्षा सेक्यूलर हुआ और शिक्षा से वंचितों को भी शिक्षित होने का अवसर मिल पाया । महात्मा ज्योतिबा फूले ने सर्व प्रथम पढ़ लिख कर तथा अपनी पत्नी को भी शिक्षित कर सदियों से शिक्षा से वंचितों के लिये सन् 1848 में पाठशाला खोल कर शिक्षा देना शुरू किये । भारतीय संविधान के लागू होने से शिक्षा का अधिकार देश के समस्त नागरिकों के लिये मौलिक अधिकार बन गया । वर्तमान में शिक्षा बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही है । विश्वीकरण का असर ,प्रिंट व इलेक्ट्रानिक्स मिडिया के अनेक रूप उपलब्ध हैं । सीखने व सिखाने का प्रक्रिया भी तेजी से बढ़ रही । इन सबके बावजूद शिक्षा के साथ सकारात्मक संस्कार व संस्कृति का अभाव सर्वत्र देखा जा रहा है । शिक्षण संस्थाओं ,झुग्गी झोपड़ी से आलीशान बंगलों तक ,गांव से शहरों तक अनैतिक ,अनाचार ,अत्याचार के समाचारों से समस्त प्रकार के मिडिया के माध्यम से देखने ,सुनने व पढ़ने का आदी भारत देश की जनता बन चुकी है । इन हालातों में शिक्षा के साथ दीक्षा ,जो मानवीय आधारित हो ,अति आवश्यक जान पड़ता है । मानव समाज के चिंतकों ,स्वयम् सेवी संगठनाओं की विशेष दायित्व बन जाता है कि : नियमित व संयमित शिक्षा के साथ मानवतावादी संस्कार व संस्कृति का सृजन व संचालन करें ।

गुरु प्रसाद कु दीक्षा खेवार के परिवार की ओर से था । इस अवसर पर विवेक खेवार ,दिशा खेवार ,आकांक्षा खेवार ,प्रिया बंजारे ,सोम देशलहरे ,स्नेहा मजूमदार ,हिमांशू गेण्डे ,मुस्कान कुर्रे ,विवेक बघेल कुनाल मारकण्डे ,जावेद टंडन ,गप्पू बंजारे ,पंकज बंजारे ,राम बाई खेवार ,धरमइतीन कुर्रे ,टी आर टंडन ,सनत कुमार डाहरे ,एफ आर जनार्दन आदि बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे ।

इसी कडी में अगले 28 मार्च ( दिन सोमवार) 2016 को शाम 6.30 बजे गुरु वंदना केन्द्र मिनी माता भवन कोहका भिलाई में छठवीं गुरु वंदना के अवसर पर "**गुरु बालकदास जी की कुर्बानी से समाज को**

**सबक लेने की जरूरत है " विषय पर अगला " परिचर्चा कार्यक्रम " आयोजित है । कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें ।**

( देवलाल सरसुधे )  
गुरु वंदना केन्द्र प्रभारी

XX

Feb 03 2016 : The Times of India (Delhi)

Wanted: Ambedkar 2.0

Sagarika Ghose

**The Dalit leadership has failed young Ambedkarites like Rohith Vemula**

The politically correct felicitations of B R Ambedkar on his 125th birth anniversary were rendered somewhat meaningless by the suicide of Hyderabad Central University student Rohith Vemula. Netas descended in quick succession on HCU. From Rahul Gandhi to Chirag Paswan, Mayawati to Arvind Kejriwal, there were familiar expressions of sympathy but little evidence of just how the political class intends to address the core issue of realizing the Ambedkarite vision for 21st century India. Particularly heartless were the utterances of Union ministers who questioned Rohith's caste without an ounce of empathy, even as they've been busily trying to appropriate Ambedkar.

When Ambedkar is only a political token, how can his modern progressive vision ever be realised? By challenging Rohith's caste status, BJP might save its minister Bandaru Dattatreya from the SCST Act but it hardly provides for a political reach-out to those who now see Rohit as a symbol of a brutally unequal order. Nor can this be Rahul Gandhi's Belchi moment: having treated its Dalit leaders as marginal representatives for decades, it will require more than a one night vigil to convince Dalit groups that Congress is willing to share power.

The Paswans and Mayawatis may have benefitted from their caste status, but their politics has revolved around self-aggrandizement, hardly the radical change in the power structure that Ambedkar envisioned, nor the idea that political power was to be sought for the larger goal of social equality. Perhaps reservation in constituencies plays a part here; forever imprisoned in the reserved trap, a competitive Dalit leadership of intellect and stature has not emerged.

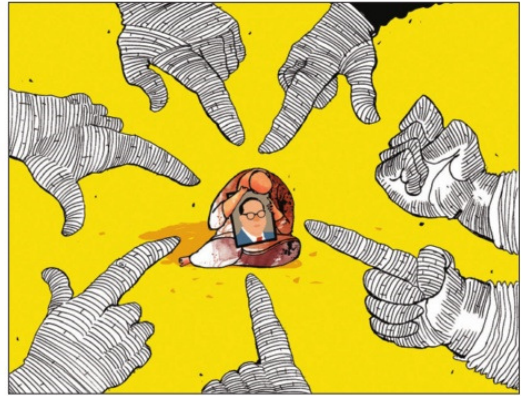
Ambedkar believed a political democracy that does not work towards an egalitarian society was meaningless. In Annihilation of Caste, he provided a trenchant critique of "enlightened high caste reformers who did not have the courage to agitate against caste". For Ambedkar, upper caste leadership of Dalits was abhorrent, he rejected both Hinduism and the caste system as well as the claims of any upper castes to represent Dalits.

But his legates in the post-Independence era, from Paswan to Mayawati to Ramdas Athavale, have rushed to form alliances with different mainstream upper caste political parties, enamored as they are of political power for its own sake. Ambedkar's urgent mission of creating a Dalit counter-narrative to caste, to Hinduism and to the dominant forms of Indian culture, to mount a full scale socioeconomic transformation of Indian society , has been forgotten by those who act in his name.

The fiery Athavale and his Republican Party of India have sought favors from whoever has been in power. Ram Vilas Paswan holds the distinction of being in virtually every cabinet since the United Front government of the mid-1990s. For a while it looked as if Kanshi Ram and Mayawati would break out of the deadening cycle of mainstream politics particularly in their BAMCEF years. A BAMCEF bulletin declared in 1976: "Educated

persons from oppressed communities are trapped in government services ... their cowardice, selfishness, inherent timidity and lack of desire of social service to their own creed ... makes them useless.“ But BAMCEF failed at an intellectual awakening. Kanshi Ram and Mayawati set up BSP in 1984 and unleashed a political revolution in UP.

Yet BSP not only created its own power elite but today has become almost unrecognizable from any other political party , particularly after Mayawati declared her mission was Sarvajan Samaj. While this made political sense, ideologically the Ambedkarite mission was somewhat betrayed. Educated Dalits may have formed entrepreneurs' groups and pressed for change in the private sector. But in the public realm, the Dalits today lack their version of an Asaduddin Owaisi. Love him or hate him, Owaisi is emerging as the political voice of the Indian Muslim, by offering a robust and reasoned counter narrative (unlike his more outrageous brother) on debates ranging from terrorism to the Uniform Civil Code. Where is a similarly argumentative Dalit leader offering a genuine alternative template?



As the scholar Kancha Ilaiah writes: “The tragedy is every young Dalit intellectual's ambition is to be a civil servant ... an administrative slave of Hindu Brahmanism ...the Dalit community has not produced a powerful socio-spiritual philosopher.“

In Homo Hierarchicus, Louis Dumont argued that the caste system is a system of ideas in which the Dalit by his very existence violates the brahmanical obsession with personal hygiene and purity. While the menstruating woman or the bereaved can escape their pollution, the Dalit is “unclean“from birth. Reservations have created a Dalit middle class, but what about the mission to smash the “purity“versus “pollution“system of ideas altogether? When Ambedkar burnt the Manusmriti, launched a movement to drink water from tanks, he took his place with Jyotirao Phule and E V Ramaswami Naicker who had not just anti-Brahmin, but anti-caste and anti-birth based social hierarchy in their overarching agenda of action.

Where is such a Dalit leader today?

Rewriting the Purusa Sukta, a hymn that places castes in a hierarchy of the Divine's Being's body parts, was a demand once voiced by Dalit intellectuals as a crucial first step in a spiritual renaissance of Hinduism; they believed this would make Hinduism more modern and egalitarian. But there is no Dalit political leader who is able to frontally challenge the idea of Dalitness in caste Hindu minds. The Dalit Panthers of the 70s have faded away, their radical poetry either co-opted or forgotten. Youth like Rohith Vemula search for answers, try in vain to make sense of the discrimination they face, yet the modern Dalit leadership continues to fail them.

**Perhaps reservation in constituencies plays a part here; forever imprisoned in the reserved trap, a competitive Dalit leadership of intellect and stature has not emerged**



प्रति

दिनांक २६ जनवरी २०१६

- १ महामहीम राष्ट्रपति महोदय  
राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली -१
- २ महामहीम राज्यपाल महोदय  
उत्तर प्रदेश सरकार लखनऊ

द्वारा: जिलाध्यक्ष महोदय जिला गौतम बुद्ध नगर (उ प्र )

विषय : हैदराबाद वि. वि. में रोहित बेमुला के राजनीतिक षड्यंत्र के तहत हुई हत्या के संबंध में जापन महोदय,

आज पूरा देश गणतन्त्र दिवस के समारोह से सराबोर है प्रजातंत्र के 65 साल बीत चुके हैं लेकिन रंग वर्ण जाति व धर्म भेद समाज में यथावत व्याप्त है कुछ सालो से साम्प्रदायिकता सिर चढ़ के नाच रही है जिसका शिकार हैदराबाद विश्व विद्यालय के अम्बेडकर विद्यार्थी सन्गठन व उसके के प्रमुख होनहार छात्र रोहित बेमुला की हत्या साम्प्रदायिक ताकतों के हाथो राजनीतिक सत्ता के दुरुपयोग व षड्यंत्र के तहत हुई है जिसका स्पष्ट प्रमाण

१ आर एस एस संचालित ए बी वी पी जैसे साम्प्रदायिक ताकतों के इशारे पर केन्द्रीय मंत्री बंडारू दत्तात्रेय के पत्र व मानव संसाधन मंत्री स्मृति ईरानी द्वारा लगातार राजनीतिक दबाव में अम्बेडकर विद्यार्थी सन्गठन के पाच छात्रो का निष्कासन व केम्पस में प्रवेश से प्रतिबन्ध.

२ रोहित बेमुला का शव विश्व विद्यालय केम्पस के प्रतिबंधित क्षेत्र में पाया जाना जहा रोहित को घुसने की अनुमति नहीं थी.

३ रोहित का लिखा हुआ प्रपत्र के शब्द उसके विचारधारा से मेल नहीं खाता.

४ यह घटना सांप्रदायिक ताकतों जो देश की सामाजिक सौहार्द्र को लगातार बिगाड़ने में लगे है, के इशारे पर ब्यक्ति के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का स्पष्ट हनन है यह प्रजातंत्र की अप्रत्यक्ष हत्या है.

अतः हम नोएडा वासी इस संस्था के माध्यम से आपको ज्ञापन भेजा जा रहा है कि इस असाधारण घटना को राष्ट्र हित में तत्काल कार्यवाही कर अनुग्रहित करे. हमारी मागे इस प्रकार है.

१ घटना की निष्पक्ष जांच सर्वोच्च न्यायालय के माध्यम से स्वतंत्र जांच एजेंसी से करायी जाय.

२. जांच की निष्पक्षता के लिए इस घटना से सम्बन्धित कुलपति हैदराबाद वि. वि. को निष्काषित किया जाय, साथ ही केन्द्रीय मंत्री बंडारू दत्तात्रेय व स्मृति ईरानी दोनों को तत्काल बर्खास्त किया जाय अन्यथा इनके रहते निष्पक्ष जांच की संभावना क्षीण रह जायेगी.

३. आर. एस. एस. व ए. बी. वी. पी. जैसे साम्प्रदायिक संगठनों को जो देश के प्रजातान्त्रिक मूल्यों पर लगातार प्रहार कर रही है जिससे सौहार्द्र लगातार बिगड़ती जा रही है, राष्ट्र हित में तत्काल प्रभाव से प्रतिबंधित किया जाय.

भवदीय

अध्यक्ष

व समस्त नोएडा निवासी